International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 10 Issue: 10 | Oct - 2026 SJIF Rating: 8.659 ISSN: 2582-3930

चुनावी फ्रीबीज बनाम राजकोषीय उत्तरदायित्व : एक आर्थिक विवेचन

1. Ankit Pandey
Research Scholar, Bundelkhand University, Jhansi

2. Rajiv Ratna Dwivedi
Associate professor, Atarra post graduate college, Atarra

सार्वजनिक चर्चा से लम्बे समय तक गायब रहने के बाद, ''रेवड़ी संस्कृति' की परम्परा कोविड–19 के दौर के बाद पुनः उभरी, और इसने तब खासा ध्यान आकर्षित किया जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2022 में जालौन जिले में बुन्देलखण्ड एक्सप्रेसवे के उद्घाटन के दौरान अपने भाषण में इसका जिक्र किया। चुनावी प्रलोभन बांटने पर बात करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा, 'आज हमारे देश में उपहार बांटकर वोट बटोरने की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है।''[1]

1990 के दशक के अंत और 2000 के दशक की शुरूआत से, जो शुरू में कुछ अलग–थलग कल्याणकारी उपायों का एक समूह था, अब राजनीतिक दलों के लिए एक रणनीतिक चुनावी हथियार बन गया है, जो अपने मतदाता आधार का विस्तार करने और चुनाव जीतने के लिए इन कार्यक्रमों का तेजी से उपयोग कर रहे हैं।[2]

जहाँ एक ओर ये उपहार सामाजिक कल्याण की भावना से प्रेरित दिखते हैं, वहीं दूसरी ओर ये अक्सर राजकोषीय अनुशासन को क्षति पहुँचाते हैं। राज्य सरकारों पर कर्ज का बोझ बढ़ता है, बजट असंतुलित होता है और आवश्यक संरचनात्मक निवेशों की अनेदेखी होती है। इसके अतिरिक्त, यह तर्क भी दिया जाता है कि इस तरह की घोषणाएँ मतदाताओं की स्वतंत्र इच्छा को प्रभावित कर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को भी कमजोर कर सकती हैं।

जहाँ एक ओर ये उपहार सामाजिक कल्याण की भावना से प्रेरित दिखते हैं, वहीं दूसरी ओर ये अक्सर राजकोषीय अनुशासन को क्षति पहुँचाते हैं। राज्य सरकारों पर कर्ज का बोझ बढ़ता है, बजट असंतुलित होता है और आवश्यक संरचनात्मक निवेशों की अनदेखी होती है। इसके अतिरिक्त, यह तर्क भी दिया जाता है कि इस तरह की घोषणाएँ मतदाताओं की स्वतंत्र इच्छा को प्रभावित कर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को भी कमजोर कर सकती है। यह शोध पत्र मुख्य रूप से इस आर्थिक द्वंद्व पर केन्द्रित है– एक ओर अल्पकालिक लोक–लुभावन व्यय, और दूसरी ओर दीर्घकालिक राजकोषीय उत्तरदायित्व। शोध का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि किस सीमा तक चुनावी मुफ्त उपहार भारत की सार्वजनिक वित्त व्यवस्था पर बोझ डालते हैं, और यह प्रवृत्ति अर्थव्यवस्था के संतुलित विकास के लिए किए प्रकार खतरा उत्पन्न कर सकती है। इस शोध पत्र का उद्देश्य चुनावी फ्रीबीज की राजनीति और उसके आर्थिक परिणामों की आलोचनात्मक विवेचना करना है। साथ ही यह शोध इस सवाल को भी उठाएगा कि क्या भारत जैसे विकासशील देश में राजकोषीय उत्तरदायित्व के साथ कल्याणकारी नीतियों के बीच कोई संतुलन संभव है।

आर्थिक लागत–

भारत में चुनाव आते–जाते रहते हैं, लेकिन वे सब्सिडी और मुफ्त सुविधाओं के रूप में वादों का ढेर छोड़ जाते हैं। ये वादे राजनीतिक दलों को विरोधियों पर बढ़त दिलाने में मद्द तो करते हैं, लेकिन राज्यों की अर्थव्यवस्था पर भी भारी बोझ डालते हैं, जो पहले से ही अपने पूंजीगत व्यय यानी भौतिक सम्पत्तियों के अधिग्रहण, उन्नयन या रखरखाव पर होने वाले खर्च को वहन करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

''मुफ्त चीजें कभी मुफ्त नहीं होती.....खास तौर पर नुकसानदेह होती हैं सब्सिडी जो कीमतों को बिगाड़ देती हैं।'' जब राजनीतिक दल ऐसी योजनाएँ पेश करते हैं, तो उन्हें मतदाताओं के सामने वित्तपोषण और लेन–देन की शर्तें स्पष्ट करनी चाहिए। मुफ्त चीजें उत्पादन और संसाधन आवंटन को नुकसान पहुँचाती हैं और बड़ी अप्रत्यक्ष लागतें लगाती हैं, जैसे कि मुफ्त बिजली के कारण पंजाब में भूजल स्तर में गिरावट। उन्होंने कहा कि ऐसी मुफ्त चीजें

निम्न–गुणवत्ता वाले स्वास्थ्य, शिक्षा, वायु और पानी की कीमत पर आती है, जिससे सबसे ज्यादा नुकसान गरीबों को होता है।''– **आशिमा गोयल, सदस्य आरबीआई मौद्रिक समिति।**

विभिन्न राज्यों के चुनावी फ्रीबीज एवं अर्थव्यवस्था के सम्बन्धों पर केस अध्ययन

महाराष्ट्र

अनुमानों से पता चलता है कि राज्य के बजट में घोषित प्रमुख योजनाओं में से, 'लड़की बहन' योजना पर प्रति वर्ष 460 अरब रूपये या 46,000 करोड़ रूपये (जीएसडीपी का 1.1 प्रतिशत) खर्च होंगे, जो कृषि व्यय के लिए कुल आवंटन 356 अरब रूपये से भी ज्यादा है। इस योजना के तहत उन महिलाओं और लड़कियों को 1,500 रूपये की मासिक सहायता दी जाएगी जिनके परिवारों की वार्षिक आय 2.5 लाख रूपये से कम है। किसानों के लिए मुफ्त बिजली योजना पर प्रति वर्ष 148 अरब रूपये (14,800 करोड़ रूपये) खर्च होंगे। कुल मिलाकर, लोकलुभावन योजनाओं के लिए बजट में 960 अरब रूपये या 96,000 करोड़ रूपये का आवंटन किया गया है। यह जीएसडीपी का 2.2 प्रतिशत और राज्य के राजस्व का 19 प्रतिशत है।[3]

Emkay रिसर्च के अनुसार ''महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव 2024 के पहले ही राज्य ने अपने राजस्व और राजकोषीय घाटे के लक्ष्य बढ़ा दिए हैं। जीएसडीपी के लिहाज से सबसे बड़ा राज्य होने के बावजूद, महाराष्ट्र का पूंजीगत व्यय और जीएसडीपी का अनुपात वित्त वर्ष 24 के बीच औसतन केवल 1.5 प्रतिशत रहा, जिससे यह 19 बड़े राज्यों में 16वें स्थान पर रहा।''

तमिलनाडु

कलैग्नार मगलिर उरीमाई थित्तम योजना के अन्तर्गत 1.15 करोड़ पात्र महिलाओं को रू0 1,000 मासिक सहायता देने का निर्णय लिया। यह योजना महिला सशक्तिकरण और घरेलू आय में सहयोग देने के उद्देश्य से शुरू की गई थी। इसके लिए सरकार ने रू0. 7,000 करोड़ का बजट आवंटित किया।[4]

महिलाओं और ट्रांसजेंडरों के लिए मुफ्त बस यात्रा : सरकार ने राज्य की सार्वजनिक परिवहन बसों में महिलाओं, छात्रों और ट्रांसजेंडरों को मुफ्त यात्रा की सुविधा जारी रखी। इस योजना के अन्तर्गत वर्ष 2023–24 में रू0 2,800 करोड़ की सब्सिडी दी गई।[5]

किसानों के लिए मुफ्त बिजली सिब्सडी : तमिलनाडु सरकार ने किसानों के कृषि पंप सेट्स के लिए बिजली पर भारी सब्सिडी दी। वर्ष 2023–24 में इस योजना पर रू0 14,000 करोड़ खर्च हुए, जिससे ग्रामीण कृषि कार्यों में राहत मिली, लेकिन बिजली बोर्ड पर राजकोषीय दबाव भी बना।[6]

पंजाब

पंजाब सरकार ने वित्त वर्ष 2023–24 में किसानों और घरेलू उपभोक्ताओं को बिजली बिल माफी की सुविधा दी। बजट अनुमान के अनुसार, कुल रू0 18,276.74 करोड़ भुगतान किया गया जिसमें रू0. 8,881.83 करोड़ कृषि उपभोग के लिए, रू0. 6,818.28 करोड़ घरेलू उपभोक्ताओं के लिए और रू0. 2,576.63 करोड़ औद्योगिक उपभोग–सब्सिडी के रूप में शामिल था (Royal Patiala, 2024)। यह सब्सिडी राज्य के राजस्व व्यय का लगभग 19% थी और पूरे सब्सिडी व्यय में इसका हिस्सा बहुत अधिक था।[7]

मुफ्त बस यात्रा (महिलाओं के लिए) : राज्य की बसों में सभी महिलाओं को मुफ्त यात्रा की सुविधा दी गई है। वर्ष 2023–24 में इस योजना पर लगभग रू0. 170–200 करोड़ खर्च हुआ।[8]

स्वास्थ्य बीमा : सरबत सेहत बीमा योजना : योजना के तहत 5 लाख रूपये तक का कैशलेस स्वास्थ्य बीमा दिया गया, जो राज्य के लगभग 42 लाख परिवारों को कवर करता है। 2023–24 में इस पर रू0. 500 करोड़ से अधिक खर्च हुआ।[9]

दिल्ली

मुफ्त बिजली उपभोक्ताओं के लिए : दिल्ली सरकार ने बिजली उपभोक्ताओं को 200–400 यूनिट तक मुफ्त बिजली प्रदान की। इस योजना का सालाना खर्च रू0. 3,600 करोड़ तक पहुँच चुका है, जो दिल्ली का सब्सिडी बिल का लगभग 77% हिस्सा बनता है।[10]

महिलाओं के लिए मुफ्त बस यात्रा : दिल्ली की सार्वजनिक परिवहन सर्विस– DTC एवं क्लस्टर बसों– में महिलाओं हेतु मुफ्त यात्रा की व्यवस्था जारी है। वर्ष 2023–24 में इस सेवा पर सरकार ने लगभग रू0. 440 करोड़ खर्च किया।[11]

मुफ्त पानी : सरकार ने पात्र घरेलू परिवारों को मुफ्त पानी की सुविधा दी, जिसके तहत उपलब्ध जानकारी के अनुसार रू0. 500 करोड़ तक का वार्षिक खर्च इस योजना पर हुआ।[12]

उत्तर प्रदेश

कृषि टयूबवेल पर 100% बिजली बिल माफी : उत्तर प्रदेश सरकार ने कृषि टयूबवेल पर बिजली बिल की पूरी माफी की घोषणा की, जिससे लगभग 1.5 करोड़ किसानों को सीधा लाभ मिला। यह घोषणा अप्रैल 2023 से प्रभावी हुई और बजट में इस योजना के लिए रू0. 1,500–1,800 करोड़ आवंटित किए गए थे।[13]

मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना और सामूहिक विवाह सहायता : राज्य में मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के तहत लड़कियों के स्वास्थ्य, शिक्षा और विवाह सहायता के लिए रू0. 700 करोड़ आवंटित थे। इसके अलावा 'सामूहिक विवाह सहायता' के तहत गरीब परिवारों की लड़कियों के विवाह हेतु रू0. 600 करोड़ का आवंटन किया गया।[14]

ग्रामवासी विधवाओं के लिए निराश्रित महिला पेंशन : विधवा महिलाओं को रू0. 1,000 प्रति माह की पेंशन प्रदान की गई। FY 2023-24 के लिए इसके लिए रू0. 4,073 करोड़ का बजट निर्धारित किया गया, जिससे लगभग 31 लाख महिलाएं लाभान्वित हुई।[15]

स्वामी विवेकानन्द युवा सशक्तिकरण योजना : उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा स्वामी विवेकानन्द युवा सशक्तिकरण योजना के अन्तर्गत 2023–24 में ''मुफ्त टैबलेट और स्मार्टफोन'' योजना शुरू की गई। इसका उद्देश्य ग्रेजुएशन, पोस्ट–ग्रेजुएशन, डिप्लोमा और तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को डिजिटल शिक्षा पहुँचाने हेतु निःशुल्क टैबलेट या स्मार्टफोन प्रदान करना था। सरकार ने इस योजना के लिए लगभग रू0. 3,000 करोड़ का बजट आवंटित किया और अनुमानित लाभार्थी संख्या 1 करोड़ छात्र रखी गई।[16]

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) के आंकड़ों से पता चलता है कि 2019–20 में कम होने के बाद सब्सिडी पर राज्य सरकारों का खर्च 2020–21 में 12.9 प्रतिशत और 2021–22 में 11.2 प्रतिशत बढ़ा है, इसके अलावा, राज्यों के कुल राजस्व व्यय में सब्सिडी का अनुपात 2019–20 के 7.8 प्रतिशत से बढ़कर 2021–22 में 8.2 प्रतिशत हो गया, झारखण्ड, केरल, ओडिशा, तेलंगाना और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों ने पिछले तीन वर्षों में सब्सिडी में सबसे ज्यादा वृद्धि देखी है, इसी बीच गुजरात, पंजाब और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों ने अपने कुल राजस्व व्यय का 10 प्रतिशत से अधिक सब्सिडी पर खर्च किया।[17]

राज्यवार उदाहरण : चुनावी फ्रीबीज़ बनाम राजकोषीय घाटा (2023–24)

राज्य	प्रमुख फ्रीबी योजनाएँ	अनुमानित खर्च (रू0. करोड़)*	राजकोषीय घाटा (रू0. करोड़)	घाटा % GSDP का	स्रोत
पंजाब	मुफ्त बिजली (300 यूनिट), सामाजिक पेंशन	`18,000+	`34,784	`5.0%	PRS
दिल्ली	मुफ्त बिजली–पानी, महिलाओं के लिए मुफ्त बस यात्रा	`11,000	`13,000	`3.5%	TOI Pioneer
तमिलनाडु	मुफ्त गैस स्टोव, फैन, मिक्सर, यात्रा सब्सिडी	`25,000+ (कुल योजनाएँ)	`30,000+	`3.2-3.4%	PRS/The Hindu
महाराष्ट्र	किसान कर्ज माफी, विद्युत सब्सिडी	`30,452	`95501	`2.5%	PRS
उत्तर प्रदेश	टैबलेट वितरण स्क्रीम, कन्या संमंगला योजना आदि।	`13,000+	`81,000	`3.5-4%	PRS

सामाजिक कल्याण एवं फ्रीबीज पर केन्द्र के व्यय

भारतीय संविधान के भाग 4 में राज्य के कल्याणकारी स्वरूप को रेखांकित किया गया है। नीति निर्देशक सिद्धान्त अपने नागरिकों के लिए आजीविका के पर्याप्त साधन, समान विकास और संसाधनों का वितरण, बच्चों, महिलाओं, कमजोर और कमजोर वर्गों के विशेष सुरक्षा, उचित स्वास्थ्य देखभाल, और अन्य प्रकार की सहायता सुनिश्चित करने के साथ गरिमापूर्ण बुनियादी जीवन की सुविधाओं को देने के लिए भारतीय सरकार को जवाबदेह बनाती है। 1960 के दशक ने पहली बार पी0डी0एस0 लांच किया गया। 1995 में मिड डे मील को राष्ट्र स्तर पर प्रारम्भ किया गया। 2013 में कांग्रेस के नेतृत्व वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यू0पी0ए0) सरकार ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम पारित किया, जिसने मिड–डे मील या मध्यान्ह भोजन, पी0डी0एस0 बौर बाल विकास सेवाओं जैसी प्रमुख कल्याणकारी योजनाओं को कानूनी अधिकार दिए, इस कानून के लाभार्थी देश की ग्रामीण आबादी का 75 प्रतिशत और शहरी आबादी का 50 प्रतिशत थे, कुल मिलाकर करीब 800 मिलियन लोग इसके तहत आते हैं।[18]

2020 में कोरोना महामारी ने केवल वेलफेयर स्टेट की महत्वपूर्ण और अपरिहार्य भूमिका को रेखांकित किया है, क्योंकि एक बड़ी आबादी ने तब अपनी आजीविका का साधन खो दिया था और आर्थिक गिरावट दुनिया के सभी हिस्सों तक दस्तक देने लगी थी, महामारी द्वारा लाए गए संकट को कम करने के लिए दुनिया भर की सरकारों द्वारा कल्याणकारी उपाय और सामाजिक सुरक्षा पहल की शुरूआत तब की गई थी।[19]

कोविड के दौरान ही आम जनता को राहत देने के उद्देश्य से पी0एम0गरीब कल्याण अन्न योजना प्रारम्भ की गई। अप्रैल 2020 से दिसम्बर 2022 तक योजना के चरण I-VII में लगभग रू0. 3.91 लाख करोड़ की राशि खर्च की गई थी, जिसमें 80 करोड़ से अधिक लोगों को हर महीने अतिरिक्त 5 किलोग्राम मुफ्त अन्न उपलब्ध कराया गया। केन्द्र सरकार ने 1 जनवरी 2024 से दिसम्बर 2028 तक के पाँच वर्षों के लिए इस योजना का विस्तार किया। उस अवधि के लिए अनुमानित कुल खर्च लगभग रू0. 11.80 लाख करोड़ है।[20] खाद्य मंत्रालय के अनुसार 2023–24 में इस योजना सहित कुल खाद्य सब्सिडी : रू0. 2.05 लाख करोड़ की रही। जो जी0डी0पी0 का 0.75 प्रतिशत के करीब रहा। किसान

कल्याण पर केन्द्रित प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना भारत सरकार की सबसे बड़ी नकद हस्तांतरण योजनाओं में एक है, जिसका वार्षिक खर्च रू0. 60,000– 61,000 करोड़ है। 2023–24 में यह भारत की GDP का लगभग 0.2% रहा।

श्रम कल्याण, स्वास्थ्य देखभाल, शहरी विकास और जल आपूर्ति के क्षेत्रों में सामाजिक कल्याण योजनाओं पर राज्यों और केन्द्र का संयुक्त खर्च, 2020–21 में 65.24 लाख करोड़ रूपये से बढ़कर 2021–22 में 71.61 लाख करोड़ रूपये हो गया– जो लगभग 10 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी थी।[21]

विमर्श और मुख्य खोजें :

मुफ्त सुविधाओं की अत्यधिक लागत

बिजल सब्सिडी, महिलाओं के लिए सरकारी बसों में मुफ्त यात्रा, मुफ्त बिजली, कृषि ऋण माफी, मुफ्त लैपटॉप, मुफ्त गैस सिलेंडर और महिलाओं, बेरोजगार युवाओं, किसानों और मजदूरों के लिए वित्तीय सहायता, 2023 से राज्य चुनावों में दी जाने वाली कुछ मुफ्त सुविधाएँ हैं। कुछ राज्यों के लिए इन मुफ्त सुविधाओं की लागत 96,000 करोड़ रूपये या राज्य के सकल घरेलू उत्पाद का 2.2 प्रतिशत होने का अनुमान है।[22]

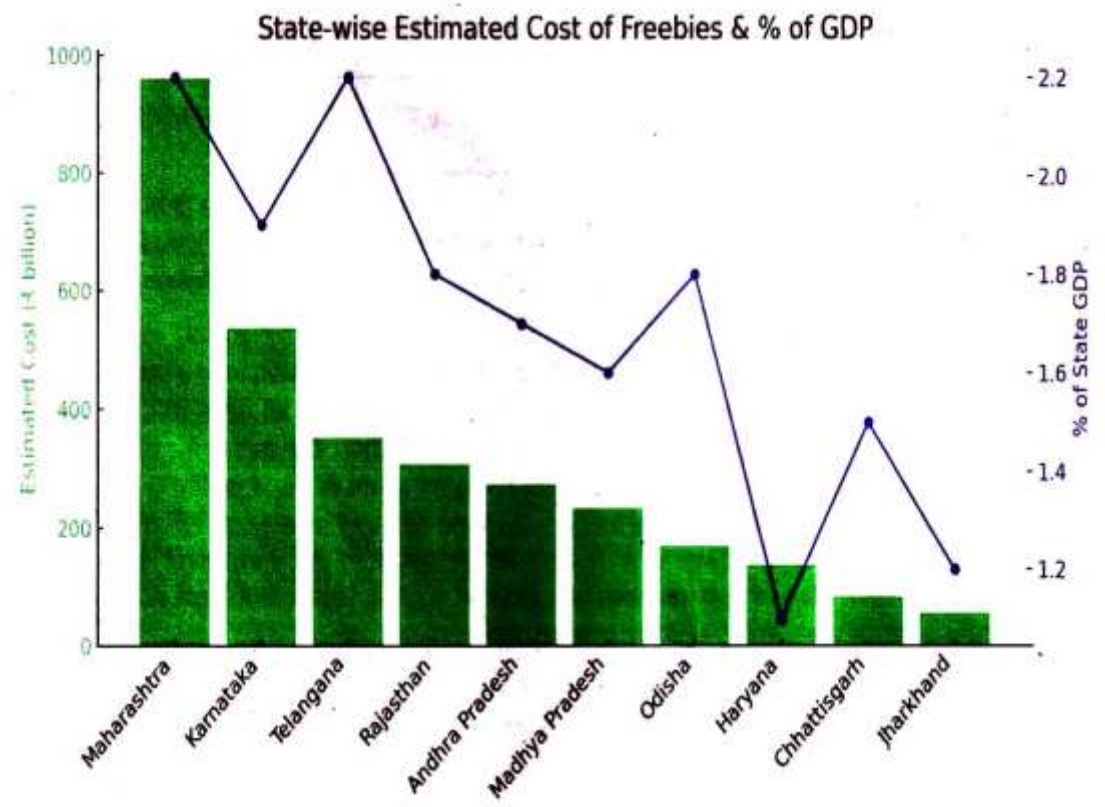


Figure1 (Sources: RBI, State Budget Documents, Emkay Research, 2024) 2023–24 के लिए

◇ हरे रंग के बार: राज्य द्वारा चुनावी मुफ्त उपहारों पर अनुमानित खर्च (₹ अरब में)।

◇ बैंगनी रेखा: उस खर्च का राज्य की GDP में प्रतिशत।

राजकोषीय असंतुलन का कारण

''चुनावी राज्यों में लोकलुभावन खर्चों की हालिया लहर अब तक चले आ रहे बेहतरीन राजकोषीय संतुलन को बिगाड़ सकती है। पिछले 20 वर्षों में 19 प्रमुख राज्यों के विश्लेषण से पता चलता है कि यह कोई नई बात नहीं है। चुनावी वर्षों

में राज्यों का राजकोषीय घाटा और राजस्व व्यय पिछले वर्ष की तुलना में औसतन अधिक रहा है।''– (EMKAY RESEARCH)

राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम 2003 के लक्ष्यों में बाधक

सार्वजनिक ऋण हेतु निर्धारित ऋण जीडीपी अनुपात लक्ष्य 60% से अधिक है।

2024–25 में सामूहिक (केन्द्र + राज्य) स्तर पर ऋण जीडीपी अनुपात 82% से अधिक रहा।[23]

कई राज्य चुनाव के पहले अत्यधिक मुफ्त घोषणाएँ करते हैं (जैसे कर्जमाफी, फ्री लैपटॉप, फ्री यात्रा) जो उनकी FRBM सीमा (राजकोषीय घाटा 3.5%) से अधिक होती है। उदाहरण : पंजाब, आंध्र प्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों का राजकोषीय घाटा 4.5% तक पहुँच गया।

फ्रीबीज और राजकोषीय घाटे के बीच सम्बन्ध :

अध्ययन दोनों में सकारात्मक सम्बन्ध दर्शाता है। जहाँ राज्य चुनावी मुफ्त सुविधाओं पर जितना अधिक खर्च करते हैं, उनका राजकोषीय घाटा उतना ही अधिक होता है। सरकारों को चुनावी वादों को पूरा करने के लिए अधिक बजट आवंटित करना पड़ता है। इससे राजकोषीय घाटा बढ़ जाता है। उच्च घाटे का अर्थ है कि राज्य अपनी आय से अधिक खर्च कर रहे हैं। इससे भविष्य में उन राज्यों की वित्तीय संभावनाओं और आर्थिक गारंटी के समक्ष गम्भीर प्रश्न उठते हैं। यह प्रवृत्ति यह भी दर्शाती है कि राज्य विवेकपूर्ण राजकोषीय प्रबंधन के बजाय अल्पकालिक राजनीतिक लाभ के लिए साल–दर–साल घाटे को बढ़ा रहे हैं।

सुझाव

1. **अवसंरचना और कौशल विकास पर खर्च**

यदि कल्याणकारी कार्यक्रमों के लिए दिए गए धन को पुनर्वितरित किया जा सके, तो बेहतर होगा कि इसे बुनियादी ढाँचे के विकास, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च किया जाए, जिनका आर्थिक विकास से अधिक सीधा सम्बन्ध है।[24]

इन क्षेत्रों की उपेक्षा से दीर्घकालिक आर्थिक गतिरोध पैदा हो सकता है, जैसा कि उन राज्यों में हुआ है जो विकास–वर्धक क्षेत्रों में निवेश किए बिना कल्याणकारी कार्यक्रमों पर निर्भर है।

2. **फ्रीबीज़ और सब्सिडी के वर्गीकरण की स्पष्ट नीति बनाना**

सभी लाभकारी योजनाओं को एक समान नहीं माना जा सकता। जनहित आवश्यक योजनाएँ (जैसे शिक्षा, पोषण, कौशल, स्वास्थ्य सहायता) और ''राजनीतिक फ्रीबीज़'' (जैसे मुफ्त टीवी, टेबलेट, बिजली) में अंतर किया जाए। बेहतर क्रियान्वयन हेतु नीति आयोग या वित्त आयोग की तरह एक स्वतंत्र निकाय की स्थापना की जा सकती है, जो फ्रीबीज़ की प्रकृति का निर्धारण करे।

3. **चुनावी घोषणा पत्रों में फ्रीबीज घोषणा से पहले 'राजकोषीय प्रभाव रिपोर्ट' देना अनिवार्य**

चुनाव घोषणा–पत्र या बजट में किसी भी फ्री योजना की घोषणा तभी की जाए जब उसके वित्तीय स्रोत और संभावित राजकोषीय बोझ का विवरण सार्वजनिक हो। उदाहरण : योजना की कुल लागत, राजस्व स्रोत, अवधि, ब्याज/ऋण बोझ का प्रभाव आदि। इसके लिए चुनाव आयोग को जन प्रतिनिधि अधिनियम, 1951 के तहत उचित शक्ति देने की जानी चाहिए तथा फ्रीबीज़ आधारित नई धारा का समावेश होना चाहिए।

4. **लाभार्थियों की सही पहचान और लक्षित वितरण**

सीमित राजकोषीय संसाधनों का उपयोग केवल उन्हीं व्यक्तियों पर हो, जिन्हें वास्तव में सहायता की आवश्यकता है। इसके लिए आधार–आधारित पहचान, सामाजिक, आर्थिक जनगणना डेटा और JAM (जनधन–आधार–मोबाइल) तंत्र का उपयोग कर योजनाओं को डिजिटली जोड़ा जा सकता है। आय, भूस्वामित्व, कर रिकॉर्ड जैसे मापदण्डों के आधार पर अपात्र लोगों को योजनाओं से बाहर करने हेतु बहिष्करण मानदंड लागू

किया जा सकता है। साथ ही, नकली लाभार्थियों की पहचान कर उन्हें हटाने, और पात्र लोगों को स्वतः जोड़े जाने हेतु ए0आई0 आधारित सिस्टम विकसित करने की आवश्यकता है। इससे सब्सिडी का दुरूपयोग रूकेगा, पारदर्शिता बढ़ेगी, और योजनाएँ वास्तव में गरीबों तक पहुँचेगी। परिणामस्वरूप राजकोष पर कम भार पड़ेगा।

5. फ्रीबीज़ खर्च की सीमा तय करना

कई राज्य GDP का 2%-4% तक फ्रीबीज़ पर खर्च कर रहे हैं जिससे उनका राजकोषीय घाटा बढ़ रहा है। अतः आवश्यक है कि राजकोषीय प्रबंधन और उत्तरदायित्व अधिनियम, 2003 में संशोधन कर राज्यों के लिए अधिकतम ''मुफ्त उपहार व्यय और जीएसडीपी अनुपात'' तय हो तथा सीमा के पार जाने पर केन्द्रीय सहायता रोकी जा सके।

निष्कर्ष–

भारत जैसे विकासशील लोकतंत्र में चुनावी फ्रीबीज का प्रचलन न केवल राजनीतिक प्रतिस्पर्धा की प्रकृति को दर्शाता है, बल्कि यह कल्याणकारी राज्य की अवधारणा और सामाजिक न्याय के प्रति संवेदनशीलता को भी परिलक्षित करता है। दरअसल, गरीबों, किसानों, महिलाओं और हाशिये पर खड़े समुदायों को लक्षित कर दी जाने वाली कई योजनाएँ– जैसे मुफ्त राशन, किसानों को आय समर्थन, या स्वास्थ्य बीमा– समाज में व्याप्त विषमता को कम करने तथा न्यूनतम जीवन स्तर सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परन्तु जब इन्हें राजनीतिक लाभ के उद्देश्य से गैर तार्किक तरीके से बिना वित्तीय आकलन, दीर्घकालिक रणनीति और लक्षित वितरण के लागू किया जाता है, तो ये योजनाएँ सार्वजनिक वित्त की स्थिरता के लिए खतरा बन जाती है।

इस शोध में यह स्पष्ट हुआ है कि अत्यधिक और अनियंत्रित फ्रीबीज का प्रवाह, विशेषकर चुनावों के दौरान, राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम द्वारा निर्धारित राजकोषीय लक्ष्यों (जैसे राजकोषीय घाटे की सीमा और ऋण–स्तर) को प्राप्त करने में बाधा बनता है। इससे न केवल बजट में निवेशात्मक व्यय (अवसंरचना, शिक्षा, नवाचार आदि) के लिए संसाधन सीमित होते हैं, बल्कि यह ऋण और ब्याज के दुष्चक्र में सरकार को धकेल सकता है। इसके अतिरिक्त, मुफ्त वस्तुएँ या सेवाएँ यदि समाज में निर्भरता की संस्कृति को बढ़ावा देती है, तो इससे दीर्घकाल में कार्यशीलता और उत्पादकता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा सामाजिक अकर्मण्यता जैसी समस्याएँ सामने आ सकती हैं।

हालाँकि यह भी नकरा नहीं जा सकता कि भारत जैसे असमानता–ग्रस्त और विविधतापूर्ण देश में कल्याणकारी हस्तक्षेप आवश्यक है। इसलिए चुनावी वादों के रूप में प्रस्तुत योजनाओं का मूल्यांकन 'फ्रीबीज़ बनाम गैर–फ्रीबीज़' के द्वैध विमर्श से हटकर किया जाना चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि सरकारें और नीति निर्माता सामाजिक कल्याण और राजकोषीय अनुशासन के बीच संतुलन बनाए रखें। इसके लिए नीति निर्माताओं को योजनाओं को राजनीतिक चश्मे से न देखते हुए कल्याणकारी स्वरूप और तार्किकता से देखना चाहिए।

इस प्रकार, भारत को ऐसी नीति अपनानी होगी जिसमें लोकलुभावन वादे और उत्तरदायी शासन, राजकोषीय संतुलन एक–दूसरे के पूरक हों न कि विरोधाभासी। जब योजनाएँ वित्तीय अनुशासन, सामाजिक आवश्यकता और राष्ट्रीय विकास के त्रिकोण में संतुलित होकर लागू की जाएंगी, तभी हम एक समावेशी, आत्मनिर्भर और स्थायी आर्थिक भविष्य की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

संदर्भ सूचीं

1. Mohan, D. (2022, July 27). The Wire. Retrieved from https://thewire.in:https://thewire.in/government/revdi-culture-welfare-narendra-modi

2. Deshpande, R., Tillin, L., & Kailash, K. K. (2019). The BJP's welfare schemes: Did they make a difference in the 2019 elections? Studies in Indian Politics, 7(2), 219-233.

3. Sharma, S. (August 26, 2024) India Today. https://www.indiatoday.in/diu/story/freebies-state-governments-centre-exorbitant-price-gdp-assembly-elections-political-parties-2587996-2024-08-26#google_vignette

4. India Today. (2023, March 20). Tamil Nadu budget 2023: Women to get Rs 1,000 monthly assistance. https://www.indiatoday.in
5. CNBC-TV18. (2023, March 20). Tamil Nadu Budget 2023 Highlights. https://www.cnbctv18.com
6. CNBC-TV18. (2023, March 20). Tamil Nadu Budget 2023 Highlights. https://www.cnbctv18.com
7. https://prsindia.org/budgets/states/punjab-budget-analysis-2024-25
8. Times of India. (2023, February 25). Free bus travel for women in Punjab crosses 3 crore rides. https://timesofindia.indiatimes.com/
9. State Health Agency, Punjab. (2023). Sarbat Sehat Bima Yojana: Annual Report 2023. https://sha.punjab.gov.in/
10. Jeelani, G. (2024, December 9). A decade of AAP govt's free power spending in Delhi. LiveMint. https://www.livemint.com/elections/bjp-congress-follow-aap-freebies-free-power-soar-as-spending-jumps-from-290-cr-to-3-250-cr-11733723587047.html
11. Times of India. (2025, April). Only Delhi women to get 'lifetime' smart card for free bus travel. Times of India. Retrieved from https://www.timesofindia.indiatimes.com/city/delhi/only-delhi-women-to-get-lifetime-smart-card-for-free-bus-rides-with-smart-cards/articleshow/119941775.cms
12. Times of India. (2025, January). Delhi subsidy bill includes free electricity, water, travel. Times of India. Retrieved from https://timesofindia.indiatimes.com/city/delhi/show-me-the-money-test-for-new-govt/articleshow/118033659.cms
13. The Times of India. (2024, March 6). 100% power subsidy for tubewells to UP farmers – a big help ahead of 2024 Lok Sabha polls. Retrieved from https://timesofindia.indiatimes.com/city/lucknow/100-power-subsidy-for-tubewells-to-up-farmers-a-big-help-ahead-of-2024-lok-sabha-polls/articleshow/108250871.cms
14. Uttar Pradesh Current Affairs. (2024). Mukhyamantri Kanya Sumangala & Samuhik Vivah Yojana allocations Rs 700 & Rs 600 crore respectively. Retrieved from https://uttarpradeshcurrentaffairs.in/2024-25
15. Uttar Pradesh Current Affairs. (2024). Nirashrit Mahila Pension Yojana allocation Rs 4,073 crore in UP budget 2023–24. Retrieved from https://uttarpradeshcurrentaffairs.in/2024-25
16. Das, A. (2024, December 16). UP Government to provide tablets, smartphones to 2 crore youth – Know complete details inside. Times Bull. Retrieved from https://www.timesbull.com/india-news/up-government-to-provide-tablets-smartphones-to-2-crore-youth-know-complete-details-inside
17. Nivedita, V. "It's Complicated – The Freebie Debate Explained," Business Line, August 26, 2022.
18. PDS Has Scope To Add 10 Million More People: Centre," Hindustan Times, August 19, 2022, https://www.hindustantimes.com/india-news/pds-has-scope-to-add-10-million-more-people-centre-101660849360911.html
19. Covid-19 Has Transformed the Welfare State. Which Changes Will Endure?," The Economist, March 6, 2021, https://www.economist.com/briefing/2021/03/06/covid-19-has-transformed-the-welfare-state-which-changes-will-endure
20. https://www.pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1980689&utm_source=chatgpt.com
21. Expenditure on Social Services Rises 9.8 pc to Rs 71.61 lakh crore in FY22: Eco Survey," Economic Times, January 31, 2022.
22. Sharma, S. (2026, Auguat 24) https://www.indiatoday.in/diu/story/freebies-state-governments-centre-exorbitant-price-gdp-assembly-elections-political-parties-2587996-2024-08-26?utm_source=chatgpt.com
23. https://www.worldeconomics.com/Country-Reviews/India/
24. Kumar, A., & Singh, R. (2021). Welfare Policies and Economic Growth in Indian States. Journal of Economic Policy Research, 14(3), 45-67.